BA - I
Paper - I
Unite - 8

Dr Raj Gopal
Assistant Professor (G/PT)
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar.
Madhubani (L.N.M.U Darbhanga)
Mail ID :- rajgopal7755@gmail.com.

Topic :⇒ Vaisesika : Abhava

(वैशेषिक दर्शन में अभाव)

वैशेषिक दर्शन में अभाव की व्याख्या एक स्वतंत्र पदार्थ के रूप में तत्वमीमांसीय दृष्टिकोण से किया गया है। वैशेषिक दर्शन के प्रणेता कणाद ने अपनी पुस्तक "वैशेषिक सूत्र" छः पदार्थों की विवेचना की है। ये पदार्थ हैं - द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय। ये सभी भाव पदार्थ हैं। ये सभी स्वतंत्र होते हुए भी आपस में संबद्ध हैं। कणाद के बाद प्रशस्तपाद ने अपनी पुस्तक "पदार्थ धर्म संग्रह" में सबसे पहले अभाव पदार्थ की विस्तृत विवेचना की है। कालान्तर में श्रीधर, उदयन, शिवादित्य आदि ने वैशेषिक दर्शन के सातवें पदार्थ के रूप में अभाव को स्वतंत्र पदार्थ माना है।

परवर्ती वैशेषिक दार्शनिकों के अनुसार जिस प्रकार भाव विषयक ज्ञान में किसी वस्तु का बोध होता है उसी प्रकार अभाव विषयक ज्ञान में किसी वस्तु के न होने का संकेत प्राप्त होता है। जैसे- टेबुल पर ग्लास नहीं है। यहाँ जिस प्रकार से टेबुल पर किताब, पेन, घड़ी आदि के होने का प्रत्यक्ष बोध होता है उसी प्रकार से टेबुल पर ग्लास का नहीं होने का संकेत प्राप्त होता है। अतः जिस प्रकार से भाव पदार्थ की स्वतंत्र सत्ता है उसी प्रकार से अभाव पदार्थ की भी स्वतंत्र सत्ता है। जहाँ भाव स्वतंत्र है वहीं अभाव परतंत्र है। अभाव भाव आश्रित है। हमें अभाव से यह समझना चाहिए कि कोई वस्तु किसी समय विशेष में किसी स्थान विशेष में विद्यमान नहीं है।

Scanned with CamScanner

वैशेषिक दार्शनिकों ने अभाव की परिभाषा में कहा है कि अनुयोगिता में प्रतियोगिता की अनुपस्थिति अभाव है। जैसे- चाय में चीनी नहीं है। यहाँ चाय अनुयोगी है चीनी प्रतियोगी है। अतः अभाव का तात्पर्य है किसी विशेष वस्तु का किसी विशेष समय में किसी विशेष स्थान में अनुपस्थित होना। इस दृष्टिकोण से अनुपलब्धि विषयक ज्ञान के लिए अभाव को स्वतंत्र पदार्थ मानना आवश्यक हो गया। अतः परवर्ति वैशेषिक दार्शनिकों ने अपने विचारों की तार्किक एवं व्यवस्थित व्याख्या के लिए अभाव को स्वतंत्र पदार्थ माना है। अतः अभाव वैशेषिक दर्शन की यथार्थवादी प्राक्कल्पना का तार्किक अभ्युपगम है।

वैशेषिक दर्शन के अनुसार अभाव दो प्रकार के होते हैं, - संसर्गाभाव तथा अन्योन्याभाव। पुनः संसर्गाभाव के चार भेद किये गये हैं - प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यंताभाव तथा सामयिकाभाव। इन भेदों को निम्न-लिखित तालिका द्वारा दिखलाया जा सकता है।

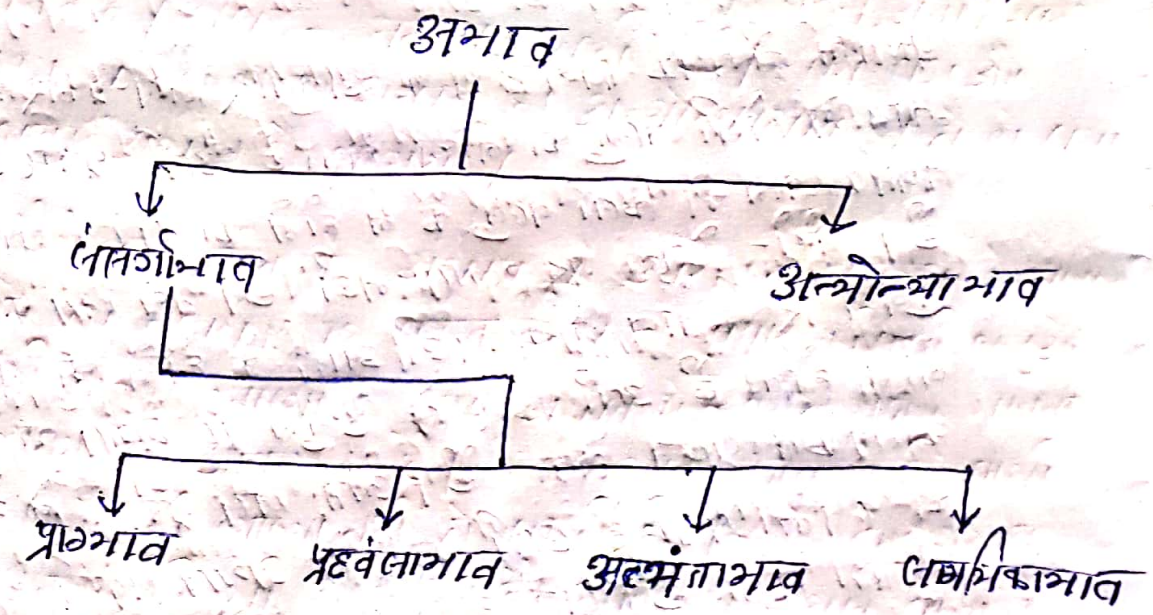

Scanned with CamScanner

(1) संसर्गाभाव :- संसर्ग का नित्य अभाव संसर्गाभाव है। संसर्गाभाव दो पदों या वस्तुओं में संबंध का अभाव है। संसर्ग का मतलब है एक वस्तु का दूसरी वस्तु में होना। जैसे - कटोरा में शब्द है। कटोरा और शब्द में संसर्ग का संबंध है। जब कटोरा से शब्द निकाल लिया जाता है तो कटोरा और शब्द में कोई संबंध नहीं रहता है। संसर्ग दो प्रकार का होता है - संयोग और समवाय। अतः संसर्गाभाव का तात्पर्य संयोग संबंध का अभाव या समवाय संबंध का अभाव। कटोरा में शब्द नहीं है - यह संयोग संसर्गाभाव है। नमक में मिठास नहीं है - यह समवाय संसर्गाभाव है।

(a) प्रागभाव :⇒ किसी कार्य की उत्पत्ति से पूर्व उसके समवायी कारण में अभाव प्रागभाव है। दूसरे शब्दों में कारण में उत्पत्ति से पूर्व कार्य का अभाव प्रागभाव है। जैसे - मिट्टी में घड़ा की उत्पत्ति से पूर्व घड़ा का अभाव प्रागभाव है। जब तक मिट्टी से घड़ा नहीं बन जाता तब तक मिट्टी में घड़ा का अभाव रहता है। परन्तु घड़ा बन जाने पर इस अभाव का अंत हो जाता है। मिट्टी में घड़ा का अभाव कब से यह बतलाना असंभव है। अतः प्रागभाव को अनादि और सान्त कहा जाता है। प्रागभाव नहीं हो तब सभी वस्तुएं अनादि हो जायेगी।

(b) प्रध्वंसाभाव :⇒ कार्य की उत्पत्ति के पश्चात कार्य का विनष्ट होना प्रध्वंसाभाव है। दूसरे शब्दों में किसी उत्पन्न हुए कार्य का विनाश होने पर उसके समवायी कारण में उसका अभाव प्रध्वंसाभाव है। जैसे - किसी विशेष घड़े को टूट जाने के पश्चात उसके टुकड़ों में उसका अभाव प्रध्वंसाभाव है। नया घड़ा बन सकता है, लेकिन टूटे हुए घड़ा का पुनर्निर्माण नहीं हो सकता है। अतः प्रध्वंसाभाव का अंत नहीं होता बल्कि इसकी शुरुआत होती है। अतः प्रध्वंसाभाव सादि और अनंत है। प्रध्वंसाभाव न हो तो सभी वस्तुएँ नित्य हो जायेगी।

Scanned with CamScanner

(c) अत्यन्ताभाव :- संसर्ग का नित्य अभाव अत्यंताभाव है। इसमें दो वस्तुओं के संबंध का त्रैकालिक अभाव होता है। इसलिए इसे त्रैकालिक अभाव भी कहते हैं। जैसे - वायु में रंग नहीं है। इस वाक्य से बतलाया गया है वायु में सदैव रंग का अभाव रहता है। इसलिए इसे अत्यंत या पूर्ण अभाव कहा जाता है। पूर्ण अभाव होने के कारण यह नित्य होता है। इसका शुरुआत और अंत नहीं होता है। इसलिए अत्यंताभाव को अनादि और अनन्त कहा जाता है।

(d) सामयिकाभाव :- संसर्ग का कुछ समय के लिए अभाव सामयिकाभाव है। इस अभाव की शुरुआत भी होती है और इसका अंत भी होता है। इसलिए इसे सादि और सान्त कहा जाता है। जैसे- बेहोशी में चेतना का अभाव। यह अनित्य एवं वर्तमान कालिक अभाव है। इसे सादि और सान्त कहा जाता है।

(e) अन्योन्याभाव :- दो या दो से अधिक वस्तुओं में एक का दूसरे में त्रैकालिक अभाव अन्योन्याभाव है। इसमें तादात्म्यता का अभाव होता है। अर्थात दो वस्तुएँ एक ही नहीं होती है प्रत्येक का एक दूसरे में अभाव होता है। यह अभाव हमेशा रहता है अतः अन्योन्याभाव भी त्रैकालिक नित्य, अनादि और अनंत है। जैसे :- घट पट नहीं है। इसमें घड़ा और कपड़ा में एकता का अभाव है। अन्योन्याभाव न हो तो सभी वस्तुएँ अभिन्न हो जायेगी।

वैशेषिक दर्शन के अभाव के उपरोक्त विवेचन के आलोक में हम निष्कर्षतः कह सकते हैं कि - संसार की सभी वस्तुओं की तार्किक व्याख्या के लिए अभाव को स्वतंत्र पदार्थ मानना समय की आवश्यकता है। केवल भाव पदार्थ से ही सभी पदार्थों की व्याख्या नहीं हो सकती है। इसके लिए अभाव पदार्थों की भी आवश्यकता है भाव एवं अभाव दोनों के समन्वय से ही संसार की सभी पदार्थों की विस्तृत व्याख्या हो सकती है। शंकर ने भी नेति-नेति के द्वारा तत्वमीमांसीय सत्ता ब्रह्म की व्याख्या की है। अतः परवर्ती वैशेषिक दार्शनिक अपने विचारों की तार्किक एवं व्यवस्थित व्याख्या के लिए अभाव को स्वतंत्र पदार्थ माना है।

Scanned with CamScanner